

# गांजा-भांग का सेवन खतरनाक हो सकता है



**गांजा**, भांग, हशीश वगैरह एक ही पौधे *केनेबिस सताइवा* से प्राप्त पदार्थ हैं जिनका उपयोग नशे के लिए किया जाता है। गांजा-भांग वगैरह का नशा टेद्राहाइड्रोकेनेबिनॉल्स (टी.एच.सी.) नामक रसायनों के कारण होता है। आम तौर पर माना जाता है कि इनसे नशा पैदा होता है मगर स्वास्थ्य पर कोई दूरगामी असर नहीं होता। खास तौर से भांग तो हमारे देश में सामाजिक मान्यता प्राप्त नशा है। बताते हैं कि इससे व्यक्ति एक काल्पनिक दुनिया में खो जाता है। मगर हाल ही में किए गए एक अध्ययन से पता चला है कि इन पदार्थों के सेवन से सायकोसिस होने का खतरा 41 प्रतिशत बढ़ जाता है।

गौरतलब है कि *लैंसेट* नामक शोध पत्रिका में प्रकाशित इस अध्ययन के लिए कम से कम 35 सर्वेक्षणों के आंकड़ों का उपयोग किया गया है। इसी कारण से इसे काफी

विश्वसनीय माना जा रहा है। इस अध्ययन के लेखक कार्डिफ विश्वविद्यालय के स्टेनले जैमिट बताते हैं कि उनके अध्ययन से पर्याप्त प्रमाण मिले हैं कि गांजा-भांग के सेवन और मानसिक सेहत का सम्बंध इतना गहरा है कि लोगों को चेतावनी दी जाए।

यह भी गौरतलब है कि वैज्ञानिकों के बीच पूर्व में इस बात को लेकर विवाद रहा है कि इन पदार्थों के सेवन से मानसिक स्वास्थ्य सम्बंधी समस्या पैदा होती है या नहीं। 1995 में *लैंसेट* पत्रिका ने ही अपने एक अंक के संपादकीय में लिखा था कि लंबे समय तक गांजे के सेवन से भी स्वास्थ्य पर कोई कुप्रभाव नहीं होता। मगर ताज़ा अध्ययन ने पूरे मामले को एक नई रोशनी में रख दिया है। जैमिट कहते हैं कि गांजा-भांग के सेवन से शिज़ोफ्रेनिया का खतरा कई गुना बढ़ जाता है। उनके आंकड़े बताते हैं कि ब्रिटेन में सारी मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं में से 12 प्रतिशत गांजे के कारण होती हैं।

इससे पूर्व जो मान्यता थी उसके अनुरूप ही गांजा भांग को सबसे कम हानिकारक नशीले पदार्थों की श्रेणी में वर्गीकृत किया गया था। इन्हें अल्कोहल से भी कम हानिकारक माना जाता है। मगर जैमिट के अध्ययन के बाद शायद स्थिति बदल जाएगी। विशेषज्ञों का मत है कि यह अध्ययन अत्यंत गहनता से किया गया है। यदि इससे अधिक विश्वसनीय परिणाम प्राप्त करने हैं तो लोगों को गांजा-भांग और प्लेसिबो देकर उनका अध्ययन करके बेतरतीब परीक्षण के अलावा कोई तरीका नहीं है। (*स्रोत विशेष फीचर्स*)